भारत सरकार
कृषि एवं किसान कल्याण मंत्रालय
कृषि अनुसंधान एवं शिक्षा विभाग

राज्य सभा
अतारांकित प्रश्न सं. 2903

दिनांक 20/12/2024

कृषि में लवणता की समस्या से निपटने के लिए उपाय

2903. **डा. अजित माधवराव गोपछड़े :**

क्या **कृषि एवं किसान कल्याण** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि:

(क) कृषि उत्पादकता को प्रभावित करने वाली लवणता की समस्या से निपटने के लिए भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद-केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (आईसीएआर-सीएसएसआरआई) करनाल द्वारा महाराष्ट्र और गुजरात सरकारों के साथ मिलकर क्या उपाय लागू किए गए हैं; और

(ख) महाराष्ट्र के पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि गतिविधियों को बढ़ावा देने और खेती की पैदावार में सुधार करने के लिए आईसीएआर ने महाराष्ट्र सरकार के साथ मिलकर क्या उपाय लागू किए हैं, तत्संबंधी जिला-वार ब्यौरा क्या है?

उत्तर

कृषि एवं किसान कल्याण राज्य मंत्री
(श्री भागीरथ चौधरी)

(क) : गुजरात राज्य में कृषि उत्पादकता को प्रभावित करने वाली लवणता की समस्या का सामना करने के लिए आईसीएआर-सीएसएसआरआई, करनाल ने जलमग्न लवणीय काली मृदा के सुधार के लिए सब-सरफेस ड्रेनेज (एसएसडी) प्रौद्योगिकी विकसित की तथा सूरत जिले (मुलाड गांव, माही-कडाना तथा उकई-काकरापार कमांड क्षेत्र) में इसका प्रदर्शन किया गया। सरदार सरोवर नर्मदा निगम के जलग्रहण (कमांड) क्षेत्र में री-सैलेनाइजिशन तथा सोडिफिकेशन को न्यूनतम करने के लिए नहर और भू-जल के मिश्रित उपयोग के लिए प्रौद्योगिकी संबंधित विभाग को उपलब्ध कराई गई है। लवण सहिष्णु किस्मों- गेंहू (केआरएल 210), घास/चारा प्रजातियों, डिचानिथयम एनुलेटम के सकर्स, देशी कपास (जी कॉटन 23) को भी प्रोत्साहित किया गया है। इसके अलावा, आईसीएआर-सीएसएसआरआई ने राज्य की एजेंसियों द्वारा आयोजित विभिन्न सार्वजनिक अभियानों, जागरूकता कार्यक्रमों, समारोहों, सेमिनारों में हिस्सा लिया।

महाराष्ट्र राज्य के लिए सीएसएसआरआई, करनाल ने सब-सरफेस ड्रेनेज प्रौद्योगिकी को मानकीकृत किया है तथा महाराष्ट्र के सांगली और कोल्हापुर जिले में इसे कार्यान्वित किया गया है जिसमें जलमग्न लवणीय क्षेत्र के सुधार के लिए 1250 हे. क्षेत्र शामिल है। इसी प्रकार, नीरा नहर के कमांड क्षेत्र में सब-सरफेस ड्रेनेज (एसएसडी) प्रौद्योगिकी से 6840 हे. क्षेत्र का उपचार/ सुधार किया गया है। आईसीएआर-सीएसएसआरआई ने महाराष्ट्र की पूर्णा घाटी की लवण प्रभावित मृदा का आकलन किया और जलवायु अनुकूल कृषि परियोजना (पीओसीआरए) के तहत लवण प्रभावित मृदा के सुधार के लिए सिफारिशें प्रस्तुत की गई तथा पूर्णा घाटी क्षेत्र में गेहूं के लवण सहिष्णु वंशक्रमों का मूल्यांकन किया गया।

(ख) : भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने कृषि कार्यकलापों को प्रोत्साहित करने तथा महाराष्ट्र के पहाड़ी क्षेत्रों में कृषि पैदावार बढ़ाने के लिए निम्नलिखित उपाय कार्यान्वित किए हैं:

- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने राष्ट्रीय नवोन्मेषी जलवायु अनुकूल कृषि (निक्रा) के तहत कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) के माध्यम से महाराष्ट्र के रत्नागिरी जिले में जलवायु अनुकूल प्रौद्योगिकियों का प्रदर्शन किया है। महाराष्ट्र के पहाड़ी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त आकलित प्रौद्योगिकियों को राज्य विभाग के साथ साझा किया गया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने जलवायु अनुकूल कृषि परियोजना (पीओसीआरए) के तहत 5724 गांवों को कवर करते हुए 16 जिलों के लिए उच्च रिजोलुशन लैंड रिसोर्स इनवेंट्री को डीओए को उपलब्ध करवाया है।
- महाराष्ट्र के पहाड़ी क्षेत्रों के लिए **'कोंकण जलकुंड'** और **'विजय बंधेरा'** जल संग्रहण प्रौद्योगिकियों को मानकीकृत किया गया है। पिछले नौ वर्षों में 102 गांवों में 1525 जलकुंड और 33 गांवों में 62 बंधेरा का निर्माण किया गया है।
- पिछले दस वर्षों (2014-2024) के दौरान पहाड़ी क्षेत्रों सहित महाराष्ट्र के लिए उपयुक्त 108 तिलहन, 58 दलहन, 5 कपास और 61 चारा फसलों की किस्में जारी की गई हैं और मांग के अनुसार इन किस्मों के प्रजनक बीज आपूर्ति किए गए हैं।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने महाराष्ट्र के पहाड़ी क्षेत्र के लिए विभिन्न कृषि वानिकी प्रणालियों को विकसित और अनुशंसित किया है।
- भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने वाणिज्यिक पुष्प-कृषि के लिए उन्नत प्रौद्योगिकियों का विकास और प्रदर्शन किया है, सतारा जिले के मान क्षेत्र में एक समर्पित अनार क्लस्टर विकसित किया है।
- 10338 अग्रिम पंक्ति प्रदर्शन आयोजित किए हैं और 36 लाख किसानों को विभिन्न फसल उत्पादन प्रौद्योगिकियों पर प्रशिक्षण दिया है। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद ने पालघर के पहाड़ी क्षेत्र में प्रशिक्षण आयोजित किए हैं और पत्तेदार और फूलदार पौधों की गुणवत्ता वाली रोपण सामग्री वितरित की है। 720 फील्ड प्रदर्शन आयोजित किए हैं, 5000 से अधिक आदिवासी किसानों को प्रशिक्षित किया है और नंदुरबार तथा पुणे जिलों में उन्नत प्याज और लहसुन उत्पादन प्रौद्योगिकियों पर 41 फील्ड दिवस/प्रशिक्षण आयोजित किए हैं।

******